परमात्मा दुनियां का सर्वोच्च न्यायधीश-दादी जानकी

आबू रोड, 30 मई, निसं। समाज की व्यवस्था को सुचारू रूप से चलाने के लिए कानून की अति आवश्यकता है। परन्तु परमात्मा का कानून सर्वोच्च और निष्पक्ष है। परमपिता परमात्मा ही दुनियां का सर्वोच्च न्यायधीश है जिसके दरबार में देर है अंधेर नहीं। उक्त उदगार प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय की मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी दादी जानकी ने व्यक्त किये वे शान्तिवन में 29 से 2 जून, 2009 तक आयोजित त्रिदिवसीय कानूनविदों के सम्मेलन के उदघाटन अवसर पर बोल रही थी।

आगे उन्होंने कहा कि मनुष्य कर्म करने के लिए स्वतंत्र है परन्तु उसका फल भोगने के लिए नहीं। क्योंकि इसमें ईश्वर की न्यायिक प्रक्रिया से गुजरना पड़ता है। मनुष्य द्वारा बनाया कानून कभी विगड़ भी सकता है परन्तु परमात्मा द्वारा बनाया गया कानून सर्वकालिक और अटल है। इसलिए यदि हम परमात्मा के बनाये गये नियम और कायदे पर चले तो कभी भी अपराधों का जन्म नहीं हो सकता है। मनुष्य को सदा सर्वोच्च न्यायधीश परमात्मा से डरना चाहिए क्योंकि उसके दरबार में देर हैं अंधेर नहीं।

सर्वोच्च न्यायालय, दिल्ली के पूर्व न्यायधीश के सी ठक्कर ने कहा कि आज लोगों में यह भ्रम है कि लॉ और जस्टिस के बीच में आध्यात्मिकता का नैतिकता का समावेश नहीं है, यह गलत है। कानून भी नैतिकता के पथ पर ही चलने के लिए प्रेरित करता है। कानून यही कहता है कि चोरी नहीं करो, ठगी नहीं करो, दूसरे की भलाई करो। यह नैतिकता नहीं तो और क्या है। मनुष्य जितना भी ज्ञान क्यों न अर्जित कर ले परन्तु वह अधूरा है। क्योंकि भारत की सम्पदा यहाँ का ज्ञान और मानवीय मूल्य है। न्याय सदा सत्य होना चाहिए। न्यायविदों की समाज को सही न्याय देने की जिम्मेवारी है। इसलिए न्यायविद को आध्यात्मिकता के सहारे स्वयं को न्यायप्रिय, नैतिकपूर्ण बनाना चाहिए। लॉ और जस्टिस साथ-साथ जा सकते हैं।

मद्रास उच्च न्यायालय के न्यायधीश पीके मिश्रा ने कहा कि आज समाज में अपराधों का ग्राफ बढ़ता जा रहा है। प्रत्येक व्यक्ति को न्यायालयों में जाने से बचना चाहिए। एक ऐसे समाज का निर्माण हो जहाँ इन चीजों की आवश्यकता नहीं पड़े। जब व्यक्ति अपने मूल कर्त्तव्यों से विमुख हो जाता है तब वह गलत रास्तों का इस्तेमाल करना प्रारम्भ करता है। मनुष्य को सदा परमात्मा से डरना चाहिए क्योंकि बुरे कर्मों का फल बुरा ही होता है। ब्रह्माकुमारीज संस्था के महासचिव ब्र0 कु0 निर्वेर ने कहा कि महात्मा गांधी ने सत्य का नियम लेकर चलते रहे और अन्ततः देश को आजादी दिला दी। आज जरूरत है कि हम सत्य का मार्ग अपनाये और सत्य परमात्मा को पहचान उसके मत पर चलने का प्रयास करें। उन्होंने सम्मेलन की सफलता पर खुशी जाहिर की।

न्यायविद प्रभाग के अध्यक्ष ब्र0 कु0 रमेश ने कहा कि हमारी न्यायिक प्रक्रिया इतनी तीव्र होनी चाहिए जिससे हमें अच्छे और बुरे होने का पता पड़ जाये। जो व्यक्ति जैसा करता है उसको वैसा ही मिलता है यह सृष्टि का अटल सत्य नियम है। इसलिए व्यक्ति को यहाँ व्यक्ति विशेष डरने के बजाए स्वयं ईश्र्र से डरे। तभी अपराध मुक्त भारत बन सकता है। गुजरात हाईकोर्ट के पूर्व न्यायधीश ए एस0 कुरेशी ने कहा कि आज जिस तरह से हमारे देश में अपराध बढ़ रहा है। वह चिन्ताजनक है। हम अपने किये कर्मों को इतना श्रेष्ठ बनाना चाहिए जिससे दूसरों के पास इसके लिए नहीं जाना पड़े। ग्राम विकास प्रभाग की अध्यक्षा ब्र0 कु0 मोहिनी ने राजयोग का अभ्यास कराया। अहमदाबाद से आये ब्र0 कु0 शारदा ने कान्फ्रेन्स के उपर प्रकाश डालते हुए कहा कि सत्य ही न्याय है और सत्य सदैव आत्मा के समीप रहता है तथा आत्मा सदैव परमात्मा की संतान है। न्यायविद प्रभाग के सक्रिय सदस्य ब्र0 कु0 अमर सिंह ने सभी का धन्यवाद ज्ञापन किया। तथा कार्यक्रम का संचालन न्यायवदि प्रभाग के राष्ट्रीय समन्वयक ब्र0 कु0 बी एल माहेश्वरी ने किया। इसी तरह यह सम्मेलन तीन दिन चलेगा जिसमें भारत तथा नेपाल से कानूनी प्रक्रिया से जुड़े वकील, न्यायधीश, लॉ के व्याख्याता, कानूनी सलाहकार सहित 15 सौ से भी लोग भाग ले रहे हैं।